चतुर मानव

• 'पराग' प्रदीप

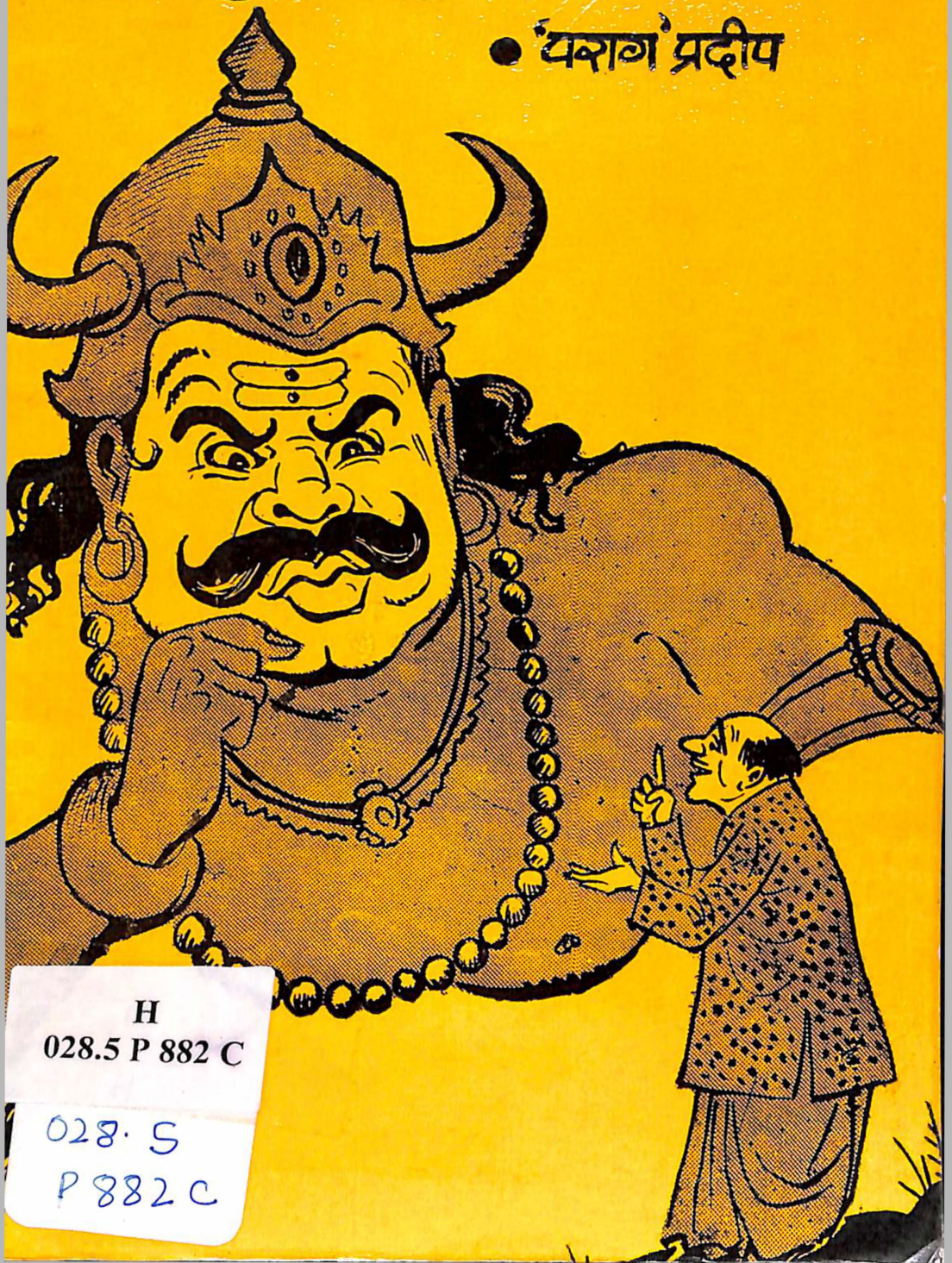

H
028.5 P 882 C

028.5
P 882 C

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

चतुर मानव

(बाल मनोरंजक कहानियाँ)

'पराग' प्रदीप

CATALOGUED

प्रकाशक

साहित्य वीथी

दिल्ली—110032

H
028.5
P882C

© लेखक

प्रकाशक : साहित्य वीथी
27/111, गली नं०-7
विश्वास नगर, शाहदरा
दिल्ली - 110032
☎ 2429079

संस्करण : प्रथम 1995

टाईप सैटिंग : सांई एडवरटाईजिंग 585, अर्जुन गली, विश्वास नगर,
शाहदरा, दिल्ली–32

मूल्य : 20.00 रूपये

CHATUR MANAV (Childern Entertaining Stories)
by PARAG PRADEEP

कहानी क्र

Library IIAS, Shimla
H 028.5 P 882 C
00110635

1. चतुर मानव 14
2. बलवान कौन
3. कॉव–कॉव 20
4. चमत्कार 27

Indian Institute of Advanced Study
ACC NO. 110635
DATE... 14-2-2003
SHIMLA

अनोखा तोहफा

प्यारे बाल मित्रों ! इस पुस्तक में प्रिय भाई 'पराग' प्रदीप आपको मनोरंजक कहानियों का अनोखा तोहफा भेंट कर रहे हैं। सभी कहानियाँ अलग--अलग मिजाज और जायका लिये हुए हैं। 'चतुर मानव' कहानी आज के मनुष्य की चालाकी और भगवान् विष्णु की दयालुता पर प्रकाश डालती है। 'बलवान कौन' में तो आपको जमकर मजा आएगा और हँसते--हँसते पेट में बल पड़ जाएंगे।

आलस्य हमारे जीवन का सबसे बड़ा दुश्मन है। यह जीवन को खोखला बना देता है। इस विषय में 'काँव – काँव' कहानी का जवाब नहीं है। 'चमत्कार' कहानी सिद्ध करती है कि बुद्धि प्राणी का अमूल्य धन है। इसके बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

मुझे विश्वास है कि ये कहानियाँ तुमको भरपूर आनन्द की मिठास तो देंगी ही, साथ ही तुम्हें ईमानदारी, सच्चाई, मेहनत, दयालुता, आलस्य त्याग का पाठ भी पढ़ायेंगी। यदि तुम अपने जीवन में इन बातों को अपनाओगे तो भविष्य का सूरज तुम्हारी मुठ्ठी में होगा ।

30/106 गली न० --7,
विश्वास नगर, शाहदरा
दिल्ली -- 110032

✡ डॉ० इन्द्र सेंगर
हिन्दी अधिकारी
परिवहन मंत्रालय

प्यारे बच्चों -
रुचि, रागवी, शालू, पारूल,
कृत्तिका, अनुभव, विभोर
गौरव, अंकित,
अभिषेक
को
समर्पित

चतुर मानव

पुराने समय की बात है। एक दिन यमलोक में यमराज और नारद जी बैठकर वार्तालाप कर रहे थे। बातचीत पृथ्वी के मनुष्य के विषय में हो रही थी। यमराज का कहना था कि मनुष्य बहुत ही सीधा और सरल होता है। वह कभी किसी के साथ छल–कपट नहीं करता, किन्तु नारद जी के विचार ठीक इसके विपरीत थे। वे कह रहे थे--"मनुष्य बड़ा चालाक और धूर्त होता है। वह कहीं भी चला जाय धूर्तता और चालाकी का जाल चारों ओर बिछा देता है।" परन्तु यमराज, नारद जी की इस बात को मानने के लिए कतई तैयार नहीं थे। आखिरकार नारद जी को जोश आ गया। उन्होंने कहा–"यदि जीवित मनुष्य से तुम्हारा वास्ता पड़े, तो तुम्हें मनुष्य के बारे में अपनी धारणा बदलते देर नहीं लगेगी।"

यमराज को बात कुछ लग–सी गई। वे बोले–"अच्छी बात है। मैं यमलोक में जीवित मनुष्य को मँगाकर उसे भी देखूँगा।" नारद जी मुस्करा उठे और नारायण, नारायण कहते हुए चल दिए।

यमराज ने तुरन्त ही अपने दूतों को बुला कर आदेश दिया—"जाओ, पृथ्वी से किसी एक जीवित मनुष्य को पकड़ कर ले आओ।"

दूत दौड़कर मृत्युलोक में आ पहुँचे। संयोग से यमदूतों की भेंट एक धूर्त पटवारी से हुई, जिसका नाम जगन था। यमदूतों ने जगन को पकड़ कर कहा—"चलो हमारे साथ चलो। तुम्हें यमराज ने बुलाया है।" जगन चिन्तित हो उठा। वह सोचने लगा—"लोग मरने के बाद यमलोक जाते हैं। पर यमराज ने उसे जीवित अवस्था में ही क्यों बुलाया है। जरूर इसमें कोई राज है। फिर तो यमराज को सबक सिखाना चाहिए।"

उसने सोच कर कहा—"मैं अवश्य तुम्हारे साथ यमलोक चलूँगा, पर जरा ठहरो, चलने से पहले मैं अपने बाल—बच्चों से मिल लूँ। यमदूत घर के बाहर खड़े होकर जगन की प्रतीक्षा करने लगें। जगन ने घर के भीतर जाकर विष्णु भगवान् की ओर से एक आदेश पत्र तैयार किया। यह आदेश पत्र यमराज के नाम था। उसने लिखा था—"यमराज तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम अपना सारा कार्य जगन पटवारी को सौंप दो। तुम बूढ़े हो चुके हो। अतः तुम्हें अवकाश दिया जा रहा है।" आदेश पत्र पर नीचे विष्णु भगवान् के हस्ताक्षर थे।

जगन आदेश पत्र जेब में डालकर घर से बाहर निकला

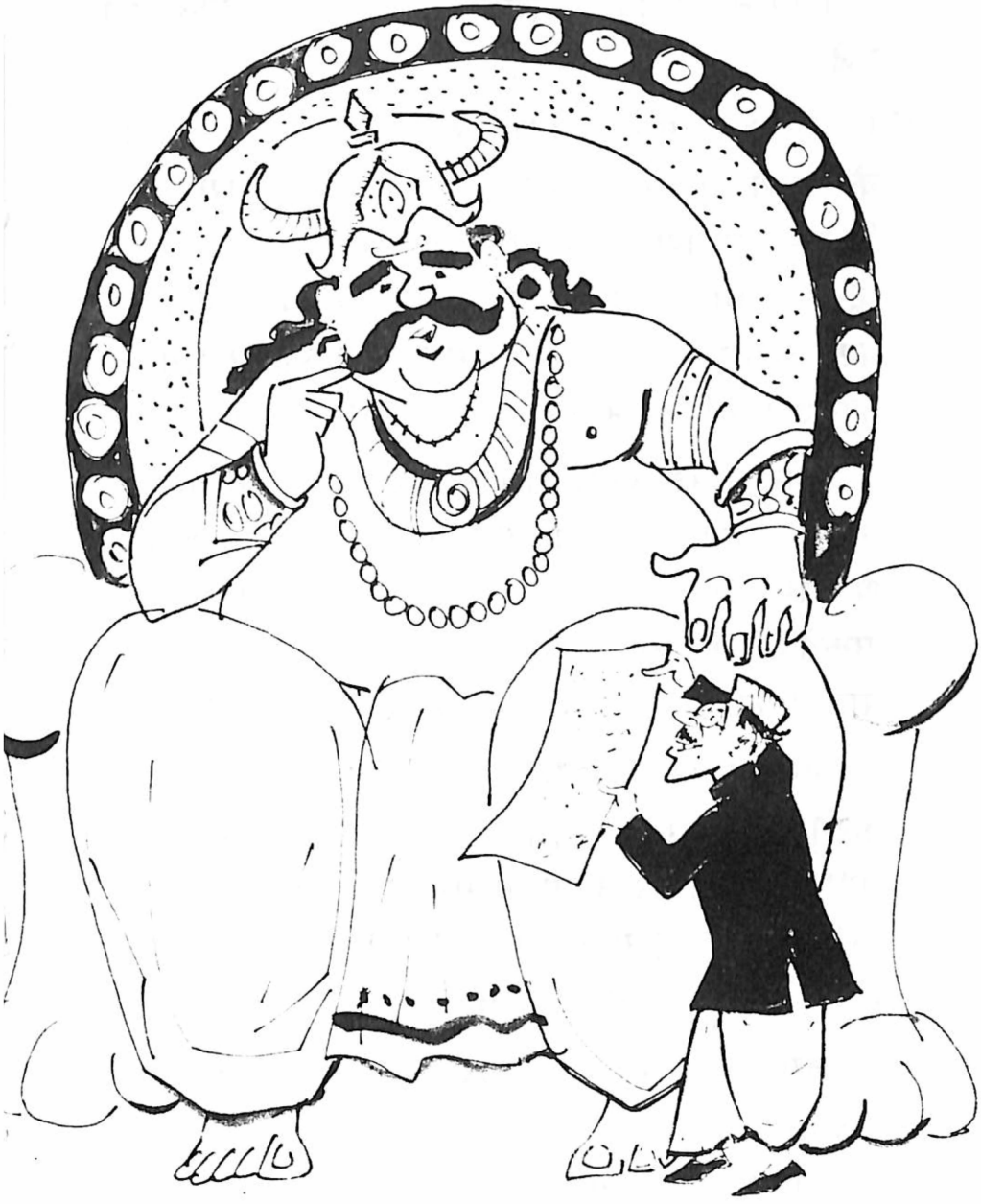

और यमदूतों से बोला—"चलो अब मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए तैयार हूँ। यमदूत जगन को साथ लेकर चल पड़े।

जगन ने यमलोक पहुँचकर यमराज को बहुत आदर के साथ प्रणाम किया। यमराज ने उससे प्रश्न किया—"तुम्हारा नाम क्या है?" जगन ने उत्तर दिया—"जगन पटवारी।" इससे पहले कि यमराज दूसरा प्रश्न करता, जगन ने बड़ी नम्रता से विष्णु भगवान् का आदेश पत्र निकाल कर यमराज के सामने रख दिया।

यमराज उस आदेश पत्र को बड़े ध्यान से पढ़ने लगे। पढ़ने के बाद नीचे देखा तो विष्णु भगवान् के हस्ताक्षर थे। यमराज एकदम सकते में आ गये, किन्तु क्या कर सकते थे। कुछ क्षण सोचकर यमराज बोल उठे—"अच्छी बात है, लो सम्भालो यमपुरी का सारा कामकाज।"

जगन यमराज के सिंहासन पर बैठकर कामकाज करने लगा। जगन ने सोचा—"उसे अब ऐसा अवसर कभी नहीं मिलेगा। उसने जीवन भर पाप ही पाप किये हैं। इसीलिए कुछ ऐसा करना चाहिए कि जब उसकी मृत्यु हो तो फिर उसे नरक में न जाना पड़े।"

जगन ने सोच—विचार कर यमपुरी के नियमों में ही परिवर्तन कर दिये। उसने घोषणा कर दी—"नरक में जितने लोग दुःख भोग रहे हैं उन्हें स्वर्ग पहुँचा दिया

जाए और स्वर्ग में जितने लोग सुख भोग रहे हैं उन्हें नरक में डाल दिया जाए।"

यमराज के इस नए आदेश से तीनों लोकों में असंतोष की आग जल उठी। पुण्य आत्माओं और देवताओं में बड़ी खलबली मच गई। देवता मिलकर भगवान् विष्णु की सेवा में उपस्थित हुए।

विष्णु भगवान् यमराज के इस नए आदेश को सुनकर चकित हो उठे। उन्होंने शीघ्र ही यमराज को उपस्थित होने की आज्ञा दी।

यमराज विष्णु भगवान् के सामने उपस्थित हुए। भगवान् ने उससे कहा—"क्यों भई, तुमने यह कैसा आदेश निकाला है? तुम पुण्यात्माओं को नरक और पापियों को स्वर्ग देकर सारा विधान ही पलट देना चाहते हो?"

यमराज ने हाथ जोड़कर निवेदन किया— "प्रभो, यह आदेश मैंनें नहीं, जगन पटवारी ने निकाला है।"

"यह जगन पटवारी कौन है ?"— विष्णु भगवान् ने विस्मय से पूछा।

यमराज ने पुनः निवेदन किया—"प्रभो, जगन पटवारी मृत्युलोक का एक मनुष्य है। आपने ही तो उसे आदेश पत्र देकर मेरे पास भेजा था। आपके आदेश पत्र के अनुसार मैंने यमपुरी का सिंहासन उसके लिए छोड़ दिया। इस समय वही यमपुरी का राजा है।

विष्णु भगवान् और भी अधिक आश्चर्य में डूब गये। उन्होंने कहा–"मैं तो किसी जगन पटवारी को नहीं जानता। मैंने न तो कभी उसे कोई आदेश पत्र दिया था और न तुम्हारे पास ही भेजा था। आश्चर्य है, इतना बड़ा प्रपंच उसने कैसे रच लिया।"

विष्णु भगवान् ने सोचते–सोचते कहा–"अच्छा, शीघ्र ही जगन पटवारी को मेरे सामने उपस्थित करो।"

जगन पटवारी विष्णु भगवान् के सामने उपस्थित किया गया। भगवान् ने उससे पूछा–"क्यों, क्या यह सत्य है कि तुम मेरे नाम से झूठा आदेश पत्र बनाकर यमराज के पास ले गये थे ? जानते हो, उस अपराध के लिए तुम्हें कैसी भयानक सजा मिलेगी?

जगन पटवारी ने निवेदन किया– "प्रभो ! क्षमा करें, यह कार्य मैंने तो अपनी रक्षा के लिए किया था। आप तो जानते ही हैं कि अपनी रक्षा के लिए यदि कोई मनुष्य किसी को जान से भी मार डालता है, तो उसे अपराधी नहीं माना जाता।"

भगवान् फिर विस्मित हो उठे। उन्होंने विस्मयपूर्ण कहा–"तुमने अपनी रक्षा के लिए यह जाल रचा था। क्या मतलब है तुम्हारा ?"

जगन ने पुनः हाथ जोड़कर निवेदन किया–"प्रभो, सबको मृत्यु के पश्चात् यमलोक जाना पड़ता है, पर

यमराज ने मुझे जीवित अवस्था में ही यमपुरी पकड़वा मँगाया। मैंने सोचा कि यमराज न जाने मेरे साथ कैसा बर्ताव करेंगे, इसलिए मैंने आपके नाम का झूठा आदेश पत्र बना कर, उन्हें राज सिंहासन से ही हटा दिया।"

जगन की बात सुनकर भगवान् ने यमराज की ओर देखा। यमराज की ओर देखते हुए पूछा—"क्या जगन पटवारी सच कह रहा हैं? क्या आपने उसे जीवित अवस्था में ही यमलोक पकड़वा मँगाया था?"

"जी हाँ।"—यमराज ने कहा।

भगवान् विष्णु विचारों में डूब गये। वे मन—ही—मन सोचने लगे—जगन पटवारी जो कुछ कह रहा है, बिल्कुल सच है। यह भी ठीक था कि उसने जो जाल रचा, सिर्फ अपनी रक्षा के लिए, किन्तु उसके जाल के कारण उसने बड़े—बड़े धर्मात्माओं को नरक में डालकर बहुत बड़ा पाप किया है।

भगवान् विष्णु की नजर में जगन का अपराध क्षमा—योग्य नहीं था। उन्होंने कहा— "जगन पटवारी, तुमने अपने आदेश से बड़े—बड़े पुण्यात्माओं को नरक में भेजकर बहुत बड़ा पाप किया है। मैं तुम्हें कुम्भी पाक नरक का दण्ड दे रहा हूँ।"

जगन ने भगवान् विष्णु के समक्ष मस्तक झुका कर निवेदन किया—"प्रभो! आपकी सजा शिरोधार्य है, लेकिन

मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे कुछ देर के लिए वापस पृथ्वी पर जाने दें।"

"क्यों?"—विष्णु भगवान् ने प्रश्न किया।

जगन ने निवेदन किया— "प्रभो! पृथ्वी पर लोगों की धारणा है कि विष्णु भगवान के दर्शन से स्वर्ग प्राप्त होता है, पर यहाँ तो एकदम विपरीत देखने को मिल रहा है। मैंने आपके दर्शन किये और आप मुझे कुम्भी पाक नरक में भेज रहे हैं। इसीलिए लोगों को समझाऊँगा कि वे विष्णु भगवान् के दर्शनों के लिए पूजा—पाठ में अपना समय व्यर्थ न करें।"

जगन की बात सुनकर सारे देवता चौंक पड़े। उन्होंने मन में सोचा कि जगन पटवारी ने तो वास्तव में विष्णु जी के दर्शन किये हैं। भगवान् के दर्शन से बड़े—बड़े पापी भी तर जाते हैं। फिर जगन को दण्ड क्यों दिया जा रहा है। यदि जगन ने सचमुच धरती पर जाकर इस बात का प्रचार कर दिया तो फिर भगवान् विष्णु का कोई भी नाम न लेगा।

देवता सोचकर बोले—"भगवान्! जगन पटवारी ठीक ही कह रहा है। आपके दर्शन से जब बड़े—बड़े पापी तर जाते हैं, तो फिर आप इसे क्यों कुम्भी पाक नरक की सजा दे रहे हैं? अतः इसे नरक में न भेजकर आशीर्वाद देकर धरती पर वापस भेज दीजिए।"

भगवान् विष्णु ने देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर ली और जगन को आशीर्वाद देकर उसे वापस धरती पर भेज दिया। साथ ही यमराज को चेतावनी दी कि भविष्य में कभी किसी मुनष्य को यमलोक में न लायें।

इधर जगन पटवारी भगवान् विष्णु के दर्शनों का प्रसाद पाकर धरती पर सुख से जीवन व्यतीत करने लगा। उधर नारद जी अपनी विजय पर मंद–मंद मुस्करा रहे थे, जबकि यमराज मनुष्य का असली रूप देख चुके थे। भगवान् के आशीर्वाद से जगन के दिल से छल–कपट अब कोसों दूर था।

बलवान कौन

एक धोबी था। बेचारा बहुत गरीब था। वह अमीरों के कपड़े धोकर गुजारा करता था। वह बस्ती के बाहर एक झोंपड़ी में रहता था।

सावन का महीना था। जोरदार बारिश हो रही थी। धोबी की झोंपड़ी बहुत पुरानी थी। हर समय उसके टपकने का डर बना रहता था। अमीरों के कपड़ों पर टपका पड़ जाए तो समझो भारी विपदा आ गई। टपके का दाग़ साफ भी नहीं होता। वह धोबिन से कह रहा था—"बड़े जोर से वर्षा हो रही है। मुझे इतना डर शेर का नहीं जितना टपके का है।"

एक शेर बरसात से बचने के लिए झोंपड़ी के पिछवाड़े खड़ा था। उसने जब वह बात सुनी तो सोचने लगा—"यह टपका तो मुझसे भी अधिक बलवान होगा, तभी धोबी को मेरे से ज्यादा टपके का डर है।"

उधर एक कुम्हार का गधा खो गया था। घनघोर अन्धेरा था। कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। कुम्हार अपने गधे को ढूँढता हुआ धोबी की झोंपड़ी के पिछवाड़े आ

पहुँचा। अंधेरे में उसका हाथ शेर पर पड़ गया। उसे लगा कि यह मेरा गधा खड़ा है। कुम्हार तुरन्त उस पर चढ़ गया और जोर–जोर से दो डंडे जमा दिये। साथ ही कड़ककर बोला–"यहाँ छिपा खड़ा है, गधा कहीं का। तेरा तो ऐसा हाल बनाऊँगा कि याद रखेगा।" इतना कहकर उसने दो–चार डंडे और जमा दिये उसकी कनपटी पर।

शेर ने सोचा – "टपका आ गया। अब बचना मुश्किल है।" वह तेजी से दौड़ पड़ा। कुम्हार ने मन–ही–मन सोचा–"ये गधा तो मेरे वाला नहीं लग रहा। वह तो एक दम मरियल था, लेकिन यह एकदम तगड़ा है। सरपट दौड़ता है। खूब हाथ लगा।" शेर जंगल की तरफ दौड़ा जा रहा था। अचानक बिजली चमकी। बिजली की रोशनी में कुम्हार ने देखा तो वह सन्न रह गया। फिर बिजली चमकी। कुम्हार ने ध्यान से देखा। अब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह गधे पर नहीं बल्कि शेर के ऊपर सवार है। इधर शेर था कि तेजी से भागा जा रहा था। मज़े की बात यह थी कि शेर कुम्हार से डर रहा था और कुम्हार शेर से।

कुम्हार सोच रहा था--कैसे जान बचे। रास्ते में एक बरगद का पेड़ था। उसकी शाखायें धरती तक लटक रहीं थी। शेर जब बरगद के पेड़ के नीचे से गुजरा, तो

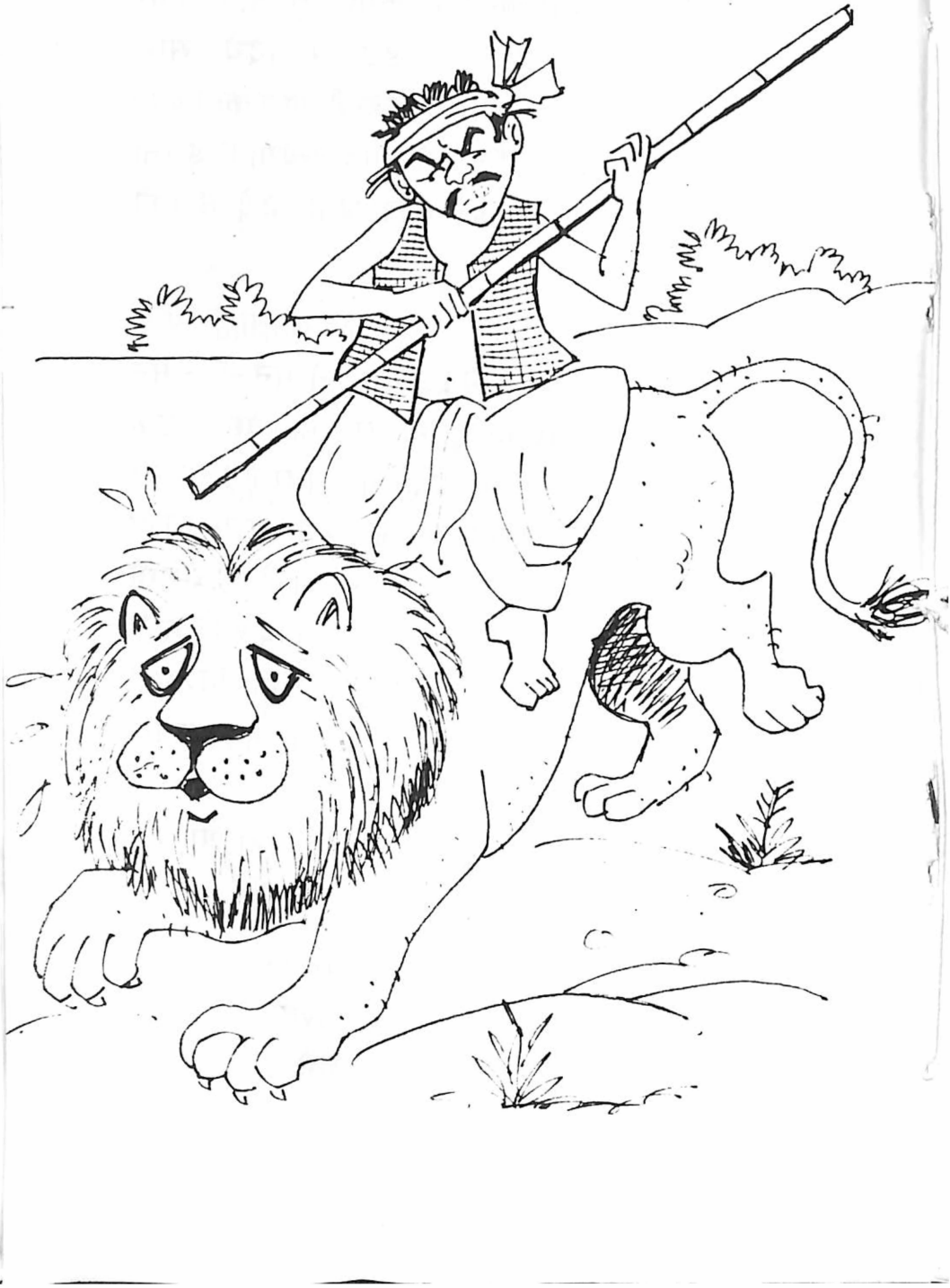

कुम्हार उचक कर पेड़ पर चढ़ गया। शेर को अपनी पीठ हल्की लगी तो संतोष हुआ और वह अधिक जोर से भागा। वह सोच रहा था – कहीं टपका फिर से न आकर दबोच ले।

उधर कुम्हार ने सोचा कि बरगद की खोह में, छिप जाना ठीक रहेगा। उसने बरगद की एक खोखली जगह खोजी और छिपकर बैठ गया। वह सोच रहा था -- रात यहीं काट लूँ, बरगद पर शेर चढ़ नहीं सकता। सवेरे उठकर घर चला जाऊँगा।

भयभीत शेर भागता ही चला जा रहा था। टपके का डर उसके दिल में बुरी तरह से बैठ गया था। रास्ते में उसे एक बन्दर मिला। शेर की ऐसी दुर्दशा देखकर बन्दर ने कहा – "मामा ! मामा ! क्या बात है? कहाँ भागे जा रहे हो?"

"भाग ले बेटे ! जंगल में टपका आ गया है।"--शेर ने हाफँते हुए कहा।

"मामा ! क्या बात करते हो। टपके से डर गये। मै तो टपके को बड़े मजे से खाता हूँ।" बन्दर ने हँसकर कहा।

"अरे भानजे, यह वह टपका नहीं है। बहुत ही भयंकर बला है, मेरी कनपटी पर ऐसे डंडे जमाए कि मुझे तो नानी ही याद आ गयी।"--शेर ने गहरी साँस लेकर कहा।

"मामा ! दिखाओ तो सही, कहाँ है वह टपका?"

"शरारत किए बगैर मानागे नहीं, चलो।" शेर ने कहा और दोनों बरगद की ओर चल पड़े। उधर कुम्हार ने भोर के प्रकाश में देखा—शेर बन्दर के साथ आ रहा है। उसने अनुमान लगाया—बन्दर ऊपर से धकेलेगा और शेर खायेगा। वह बरगद की खोह में छिपकर बैठ गया। सिर पर पत्ते डाला लिये।

शेर बरगद के नीचे खड़ा था। उजाला फैल गया था, इसी कारण शेर उतना नहीं डर रहा था। सोच रहा था—यदि टपका आ ही गया तो भाग लूँगा। बन्दर बरगद पर चढ़ गया। वह बरगद के फल तोड़—तोड़ कर नीचे फेंकने लगा और बोला—"मामा, क्या यही है टपका?"

"भानजे ! जब टपके की पकड़ में आयेगा ना, तब पता लगेगा।"—शेर ने कहा।

बन्दर था चपल। वह उछलता कूदता वहीं जा बैठा, जहाँ कुम्हार छिपा हुआ बैठा था। उसकी पूँछ से पत्ते हट गये। कुम्हार को लगा कि अब जान नहीं बचने वाली। करे तो क्या करे। बन्दर की पूँछ खोह के अन्दर कुम्हार के आगे लटक रही थी। कुम्हार ने सोचा—यह बढ़िया मौका है, चूक गया तो फिर न मिलेगा। उसने बन्दर की पूँछ को दोनों हाथों से जोर से जकड़ लिया।

जब बन्दर ने वहाँ से उछलकर दूसरी टहनी पर जाने

की कोशिश की तो उससे हिला भी नहीं गया। उसे पूँछ भारी लग रही थी। उधर शेर ने कहा—"क्या हुआ? क्या हाल है?"

अब बन्दर भी डर गया। उसने पूँछ छुड़ाने के लिए जोर लगाया। उधर बन्दर जोर लगा रहा था, इधर कुम्हार खींच रहा था। इस रस्साकसी में बन्दर की पूँछ उखड़ गई और वह धम्म से नीचे आ पड़ा। शेर तो पहले ही भाग खड़ा हुआ था, बन्दर भी उठकर सरपट भागा। दोनों भागते हुए दूर निकल गये। शेर बोला—"क्यों भानजे! अब समझ में आ गया, टपका क्या बला है?"

काँव–काँव

बहुत पुरानी बात है। जब धरती पर सारे पशु–पक्षी एक ही रंग के होते थे। उनका रंग मटमैला होता था, परन्तु पहाड़–नदियाँ, पेड़–पौधे और फूल आज–जैसे ही रंग–बिरंगे थे। पशु–पक्षी जब भी रंगीन प्रकृति को देखते, तो उनका मन बहुत उदास होता। वे सोचते–प्रकृति पहले ही रंग–बिरंगी है। उस पर भी रोजाना नये–नये रंग बदलती रहती है। कभी पीले, नीले फूल खिलते हैं, तो कभी लाल और सफेद। संध्या भी जाते–जाते कई रंग बदलती है। बादलों को अलग–अलग रंगों में देखकर हमें अपना रंग बहुत ही बुरा लगता है। काश! हम भी रंग–बिरंगे होते।

पशु–पक्षी सोचते तो बहुत थे, मगर उनकी समझ में कुछ नहीं आता कि वे अपना रंग कैसे बदलें। एक दिन उन्होंने इस पर विचार करने के लिए एक सभा बुलाई।

सब पशु–पक्षी इकट्ठे हुए और सभा में अपनी बात रखी। यह सुनकर दर्जी पक्षी बोल उठा–"यह कोई बड़ी बात नहीं है। इस बारे में कभी किसी ने मुझे बताया ही नहीं। मेरे पास इस समस्या का हल है। मैं जब चाहूँ

तब अपना रंग बदल सकता हूँ और आपका भी रंग बदल सकता हूँ। इसीलिए तो मुझे दर्जी पक्षी कहा जाता है।"

यह सुनकर सभी पशु–पक्षियों में खुशी की लहर दौड़ गई। वे खुश थे कि उन्हें भी अब अपने भद्दे रंग से छुटकारा मिल जायगा।

अपनी खुशी पर किसी तरह काबू पाते हुए मोर ने कहा–"भाई कुछ विस्तार से बताओ तो बात बने। मुझे रंगों से बहुत प्यार है। मैं तो चाहता हूँ कि मेरे शरीर पर कई रंग हों।"

दर्जी पक्षी ने समझाया–"दिन निकलने से लेकर अगले दिन सूरज निकलने तक मैं सब की पोशाकें तैयार कर दूँगा। उनमें से सब अपनी मर्जी से पोशाक पहन लें। जो जैसी पोशाक पहनेगा, उसका वैसा ही रंग हो जायगा। हाँ, एक बार रंग चुन लेने के बाद मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा।"

यह सुनकर सारे पशु–पक्षी आनन्द से नाचने लगे। सब चाहते थे कि जल्दी से जल्दी कोई दिन तय किया जाय।

हरेक अपनी पसंद की बात कहने लगा। इससे आपस में मतभेद होने लगा। मतभेद को समाप्त करने के लिए दर्जी पक्षी बोला–"मेरे विचार से हमें बसंत का इंतजार करना चाहिए। उन दिनों चारों ओर रंग ही रंग बिखरे

...titute of A...
ACC NO 110635
DATE 14.2.2003

होंगे !"

यह सुझाव सभी को पसंद आया। वैसे भी किसी के लिए दर्जी पक्षी की बात टालना सम्भव नहीं था। सभी उसको प्रसन्न रखना चाहते थे, ताकि बढ़िया से बढ़िया पोशाक मिल सके। अब सारे पशु–पक्षी बेचैनी से बसंत का इंतजार करने लगे।

इन सब से अलग–थलग था — कौआ और उसका दोस्त भालू। वे दोनों घमंडी और आलसी थे। दिन भर कुछ नहीं करते थे। हर समय सोते रहते और दूसरों का खाना चुराकर पेट भरते। इसी तरह वे अपना दिन बिताते।

आखिरकार वह निश्चित दिन आ पहुँचा। सूरज निकलने से बहुत पहले ही सारे पशु–पक्षी, दर्जी पक्षी के घोंसले के बाहर जमा हो गये। जैसे ही मुर्गे ने बाँग दी सभी जोर–जोर से चिल्लाने लगे। दर्जी पक्षी के लिए अब सोना मुश्किल हो गया था।

वह शीघ्र उठा। सूरज की पहली किरण फूटते ही दर्जी पक्षी ने अपना काम शुरू कर दिया। उसने सूरज की किरणों से सुनहरा और हल्का लाल रंग लिया। स्वच्छ आकाश से नीला तथा आसमानी, बादलों से स्लेटी, पेड़ों से हरा तथा भूरा, फूलों से लाल, पीला, बैंगनी और पर्वत की चोटियों पर पड़ी बर्फ से सफेद रंग लिया। उसे जहाँ भी कोई रंग दिखाई देता, वह उसे लेकर तुरंत कोई

पोशाक सीं डालता।

हालाँकि उसने शोर मचाने को मना कर रखा था फिर भी जोश में पशु–पक्षी उसे कोई ना कोई नया रंग सुझाने के लिए बोल पड़ते थे। दर्जी पक्षी जितनी तेजी से काम कर सकता था, कर रहा था। शाम तक उसने लगभग सभी पोशाकें बना डालीं।

पशु–पक्षी रंग–बिरंगी पोशाकें पहन कर हँसते–खिलखिलाते और चहकते हुए दर्जी को धन्यवाद लेकर लौटने लगे। खुशी के इस मौसम में किसी को कौए और भालू का ध्यान न रहा।

रात होने को आई, किन्तु कोई सोना नहीं चाहता था। सब दर्जी पक्षी के गुण–गान में मस्त थे। जब कौए ने सारे पक्षियों को गाते–बजाते सुना, तो उसके मन में जिज्ञासा जगी और नीचे उतर कर वहाँ पहुँचा, जहाँ सब नाच रहे थे। ज्यों ही कौए की नजर उनके शरीरों पर पड़ी तो वह चौंक उठा। वास्तव में सभी पशु–पक्षी बहुत ही लुभावने लग रहे थे। उसने अपने पास ही नाच रहे एक तीतर से पूछा–"यह सब क्या है, भई?" उसके स्वर में अब भी रूखापन था। तीतर ने उसी मस्ती में उत्तर दिया–"तुम नहीं जानते। आज दर्जी पक्षी ने हम सबके लिए नई पोशाकें सीं कर दी हैं। तुम लेने क्यों नहीं आये?"

कौआ गुस्से में भरकर बोला–मुझे किसी ने बताया

क्यों नहीं?" उसे अपना भद्दा रंग बहुत ही बुरा लग रहा था। अब सिर्फ भालू ही उसके रंग जैसा रह गया था।

कौए को उदास देखकर सबने कहा–"हम तो काफी दिनों से यह बात करते रहते थे, लेकिन तुमने कभी इसे जानने की कोशिश ही नहीं की।"

सारस ने सुझाव दिया–"अभी तो दिन निकलने में बहुत समय है। तुम शीघ्र ही दर्जी पक्षी के पास जाओ। देखो शायद कुछ हो सके।"

कौआ फौरन दर्जी पक्षी के घोंसले की ओर चल दिया। रास्ते में उसने भालू को भी जगाया। दुःख के मारे उसका भी बुरा हाल था। दर्जी पक्षी दिन भर की थकान के बाद गहरी नींद में सो गया था। कौए ने उसे जगाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु दर्जी पक्षी की नींद टूट ही नहीं रही थी। सारा आकाश काले–काले बादलों से घिरा था। उसने सोचा – शीघ्र ही बरसात होने लगेगी तब तो बहुत मुश्किल हो जायेगी। दोनों ने शोर मचा कर उसे जगा ही दिया।

दर्जी पक्षी चिड़चिड़ाते हुए उठा – "कौन हो? क्यों मुझे तंग कर रहे हो?, मैं बहुत थका हुआ हूँ।"

कौए ने रुआँसे स्वर में कहा–"तुमने मेरे और भालू के लिए तो पोशाक बनाई ही नहीं।"

दर्जी पक्षी चौंका–"ऐसा कैसे हुआ? मेरे पास तो काफी

समय था। कोई पशु–पक्षी बचा भी नही था।" तभी उसने कौए और भालू के भद्दे रंग की ओर देखा। वह शीघ्रता से उठकर बैठ गया। बोला–"अभी सूरज निकलने में कुछ देर है। मैं तुम्हारे लिए कुछ करता हूँ।" यह कहकर उसने कौए और भालू के लिए पाशाकें सींना शुरू कर दिया, किन्तु रात की कालिमा और काले बादलों के कारण उसे रंग दिखाई नहीं दिये। विवश होकर उसने उसी रंग की पोशाकें बना दीं।

कौआ बहुत दुःखी हुआ, पर भालू की मस्ती में कोई अन्तर नहीं पड़ा। उसने सोचा–जो भी है, पहले से अच्छा ही रंग है। अब कौए को रह–रह कर अपने आलस पर ग्लानि हो रही थी। उसे बादलों पर गुस्सा आया। बादलों के छा जाने के कारण ही उसका रंग हमेशा के लिए काला हो गया। अगर आसमान में बादल न होते तो, दर्जी पक्षी को चन्द्रमा की चाँदनी से ही कुछ रंग मिल जाते और वह भी दूसरे रंग–बिरंगे पशु–पक्षियों की तरह ही सुन्दर और रंगीन बन जाता।

यही कारण है कि उस दिन से फिर कौए ने आलस करना छोड़ दिया, परन्तु बादलों पर उसका कोई वश नहीं था। अब जब भी आकाश में बादल घिरते हैं, तभी कौए को बरबस क्रोध आ जाता है और वह जोर–जोर से काँव–काँव कर अपना विरोध व रोष प्रकट करने लग जाता है।

चमत्कार

एक गाँव में एक बढ़ई रहता था। उसका नाम मोचा था। मोचा के सात बच्चे थे। अधिक बच्चे होने के कारण, घर की हालत बहुत खराब थी। उसे काम भी कम मिलता था। क्योंकि मोचा के बाप–दादा भी बढ़ई का ही काम करते थे इसीलिए उसके पास खेती बाड़ी भी नहीं थी। गुजारे के लिए, उसे भी बढ़ई का ही काम करना पड़ता था। मोचा की पत्नी भी दिन–रात मेहनत करती थी। इसके बावजूद गुजारा मुश्किल से ही हो पाता था।

मोचा बढ़ई प्रातः ही अपना औजारों का थैला लेकर घर से निकल पड़ता था। जब काम मिलता, तो कुछ पैसे घर ले आता, वरना शाम को खाली हाथ ही घर लौटता था। जिस दिन काम नही मिलता था, उस दिन भी वह इधर–उधर घूमता रहता था। क्योंकि जब घर जल्दी लौट आता था, तो उसके सातों बच्चे उससे तरह–तरह की फरमाइशें करते थे। शाम को जब मोचा घर लौटता तो सारे बच्चे उसे घेरकर शोर मचाना शुरू कर देते थे। मोचा को जिस दिन काम मिलता, वह बच्चों के लिए कुछ न कुछ अवश्य लाता था। लेकिन जिस

दिन काम नहीं मिलता था उस दिन वह बच्चों को किसी तरह बहलाता। बच्चे चिल्लाकर कुछ माँगते, तो वह दुःखी हो जाता था। वह अक्सर गरीबी दूर करने के बारे में सोचता रहता था। वह कोई भी जादू की चीज पाने के सपने देखता, जिससे वह तुरन्त धनी बन जाए।

एक दिन उसने किसी से सुना कि पास के गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता है। वह पहले बहुत गरीब था। मगर उसे कहीं से एक जादुई छड़ी मिल गई, जिससे वह धनी हो गया। बूढ़ा अब अकेला है, लेकिन जादुई छड़ी अभी भी उसके पास है।

समय पाकर मोचा बूढ़े किसान के घर गया। अकेले बूढ़े को मोचा से मिलकर बहुत खुशी हुई। बूढ़े ने उससे कहा——"कभी–कभी आया करो।" यह सुनकर मोचा बहुत प्रसन्न हुआ। अब जब भी उसे काम नहीं मिलता था, वह बूढ़े के पास जाकर उसकी सेवा करता। बूढ़ा मोचा से बहुत खुश था। बूढ़ा किसान मरने से पहले जादुई छड़ी किसी को देना चाहता था। उसने मोचा को इसके लिए ठीक समझा। बूढ़े ने एक दिन उससे कहा–"मोचा मैं बहुत बूढ़ा हूँ। तुमने मेरी बहुत सेवा की है। मैं तो कभी भी मर सकता हूँ। मेरे पास एक जादुई छड़ी है। उसे मैं मरने से पहले तुम्हें देना चाहता हूँ।"

मोचा को तो इसी दिन का इन्तजार था। वह खुशी

से फूला न समाया। उसने अपनी खुशी को छिपाते हुए बूढ़े से कहा—"बाबा मैं तो जादू–मंत्र नहीं जानता। जादुई छड़ी लेकर मैं क्या करूँगा?"

बूढ़ा मुस्कराया और उसे समझाते हुए बोला—"देखो बेटा, मैं तुम्हें छड़ी का रहस्य बताया हूँ। इस छड़ी को पाने के लिए सात दिन तक व्रत रखना होगा। शरीर पर केवल सफेद कपड़े पहनने होंगे। यह व्रत पूर्णिमा के दिन खत्म होना चाहिए। उसी दिन तुम शाम के समय आना। बिना बोले मेरे घर के बीच के खम्भे पर लटके थैले में रखी छड़ी को ले जाना। फिर घर में ले जाकर पूजा–पाठ करके, इसे अपने घर के बीच के खम्बे पर टाँग देना। इससे तुम जो भी माँगोगे, तुम्हें मिल जायेगा। छड़ी तुम्हें केवल तीन वरदान ही देगी। एक बार में यह एक चीज़ का वरदान देती है। एक–एक करके तीन वरदान माँग सकते हो।"

मोचा खुशी–खुशी घर आया और अपनी पत्नी व बच्चों को जादुई छड़ी की कहानी सुनाई। वे सब अब गरीबी दूर होने के सपने देखने लगे। सभी पूर्णिमा की प्रतीक्षा करने लगे। मोचा ने पूर्णिमा के पहले व्रत रखना शुरु कर दिया।

•

आखिर पूर्णिमा का दिन आ ही गया। मोचा गया और बूढ़े के घर से छड़ी अपने घर ले आया। पूजा–पाठ करने के बाद उसने छड़ी को खम्भे पर लटका दिया। उसी

समय सारे बच्चे वहाँ इकट्ठे हो गये। वे सब जोर–जोर से चिल्लाने लगे – "मैं भी, मैं भी माँगूगा।"

मोचा बच्चों के चिल्लाने से क्रोधित हो उठा। उसने उन्हें चुप रहने को कहा, किन्तु किसी ने एक न सुनी। इससे मोचा का गुस्सा और बढ़ गया। गुस्से में उसके मुँह से निकल गया–"इनके मुँह से बोल न निकले।"

मोचा के इतना कहते ही सभी बच्चों के मुँह बन्द हो गए। एक वरदान हाथ से जा चुका था। अब आने वाली पूर्णिमा तक बेचारे बच्चों के मुँह के बोल खुलवाने की प्रतीक्षा करनी थी। वह बड़ी मुसीबत में पड़ गया था। बोल न पाने के कारण बच्चे उदास रहते थे। किसी प्रकार अगली पूर्णिमा का दिन आ पहुँचा। मोचा ने पूजा–पाठ किया। छड़ी के सामने हाथ जोड़कर बोला–"हे जादुई छड़ी मेरे बच्चों के मुख में फिर से बोल आ जाए।" मोचा के मुँह से यह निकलते ही बच्चे फिर से जोर–जोर से बोलने लगे। वे फिर से नई–नई फरमाइशें करने लगे। मोचा समझ नहीं पा रहा था कि किसके लिये क्या माँगे। अब एक आखिरी वरदान ही बाकी बचा था।

फिर तीसरी पूर्णिमा आई। मोचा ने पूजा–पाठ करके फिर छड़ी से प्रार्थना की–"हे जादुई छड़ी बच्चों को बुद्धि दे। ये काम में मेरी सहायता करें।"

एक दम जैसे चमत्कार हुआ। शरारती बच्चे भोले बन

गए। मोचा ने छड़ी को खम्भे से उतारकर संदूक में रख दिया। अब वह और उसके बच्चे जी लगाकर मेहनत करने लगे। तीसरे वरदान ने उनकी किस्मत को बदल दिया। अब मोचा का परिवार सुखी था।

* * * * * *

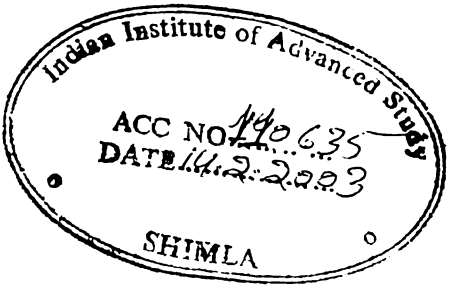

I. I. A. S. LIBRARY

:c. No. 110635

book was issued from the library on the date
'amped. It is due back within one month of its
f issue, if not recalled earlier.

VANCED STUDY

....
....
....

Signature

RKumari

Library IIAS, Shimla
H 028.5 P 882 C
00110635